

प्रतिशब्दवत् (von प्रतिशब्द) adj. *widerhallend*: गुक्ता KATHÁS. 110, 86.
प्रतिशाखा pl. BHĀG. P. 12, 6, 39 *alle erwähnten Çākḥā* nach dem Comm.
— Vgl. प्रतिमात्रा.

प्रतिश्रय 2) ऋ° adj. KATHÁS. 32, 295. Z. 3 यत्र च स्यात्प्रतिश्रयः auch
Spr. 3312.

प्रतिश्रित n. *Obdach* MBH. 13, 355. प्रतिश्रय ed. Bomb.

प्रतिश्रुत् 1) KATHÁS. 107, 79.

प्रतिश्लोकम् BHĀG. P. 12, 12, 51.

प्रतिषेध 1) कालक्षरणप्रतिषेधाय *um keine Zeit zu verlieren* UTTARARĀ-
MAK. 96, 1 (123, 4). In der Dramatik *ein vor den ersehnten Gegenstand sich*
stellendes Hinderniss: ईप्सितार्थप्रतीघातः प्रतिषेध इतीप्पते SĀH. D. 386.

प्रतिष्ठम् *Hemmung, das Aufheben einer Wirkung*: अय्यकाम्बुविषा-
दीनाम् BHĀG. P. 11, 13, 8.

प्रतिष्ठम्भिन् adj. *hemmend*: शक्रकस्त° R. 7, 23, 4, 43.

प्रतिष्ठा 2) कुल° UTTARARĀMAK. 99, 7 (131, 7). अप्रतिष्ठे रघुव्येष्टे का
प्रतिष्ठा कुलस्य नः 9. — 5) WEBER, RĀMAT. UP. 303. Verz. d. Oxf. H.
103, a, N. 4. — 6) नरस्य का प्रतिष्ठा स्यादेतत्पृष्टो वदस्व मे MBH. 12,
6690. प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लभो परो मतः 6691. कृती सर्वत्र लभते
प्रतिष्ठा भाग्यसंयुताम् Spr. 2963. — 8) RĀGA-TAR. 3, 28. लिङ्ग° Verz. d.
Oxf. H. 43, a, 28. °तत्र ebend. °तत्र 289, b, No. 693.

प्रतिष्ठान 1) d) KATHÁS. 38, 2, 73, 417. प्रतिष्ठानाभिधानो ऽस्ति देशो
गोदावरीतटे 73, 21.

प्रतिष्ठायन *das Feststellen, Begründen, Erhärten* SARVADARĀCANAS. 32, 4.

प्रतिष्ठासारसंग्रह m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 341, a, 36.

प्रतिसंक्रम 1) *Auflösung*: भूतानां स्थितिरूपतिरहं वै प्रतिसंक्रमः
BHĀG. P. 11, 16, 35. — 2) *Eindruck*; am Ende eines adj. comp. f. स्त्रा SAR-
VADARĀCANAS. 133, 3.

प्रतिसंक्राम m. *Auflösung* BHĀG. P. 11, 19, 16.

प्रतिसंचर Z. 1 lies (von चर mit प्रतिसम्).

प्रतिसम् (1. प्र° + सम्) adv. *bei —, in jedem Hause* BHĀG. P. 10, 71, 33.

प्रतिसंदेश KATHÁS. 74, 94. 101, 117. 102, 143.

प्रतिसंधान 4) *das sich-wieder-Vergegenwärtigen, sich-wieder-zum-Be-*
wusstsein-Bringen SARVADARĀCANAS. 92, 14. 17.

प्रतिसंधि Z. 3. fg. NILAK. zu MBH. 12, 7505: प्रतिसंधिः प्रतीयः संधि-
र्वियोगः विषयेभ्य उपरम इति यावत्.

प्रतिसंबन्धि (1. प्र° + संबन्धिन्) adv. *je nachdem dieses oder jenes*
damit verbunden wird SĀH. D. 293, 12.

प्रतिसर्ग f. bei den Buddhisten Bez. einer der fünf Schutzmächte (प-
चरणाः) WILSON, Sel. Works 2, 13.

प्रतिसर्ग Verz. d. Oxf. H. 8, a, 15. 30, a, 27.

प्रतिसाधन (1. प्र° + सा°) n. *Gegenbeweis* SARVADARĀCANAS. 128, 8. 133, 15.

प्रतिसारणा f. Bez. eines best. Processes, dem Mineralien (insbes.
Quecksilber) unterworfen werden, Verz. d. Oxf. H. 320, a, 15.

प्रतिसारिन्, NILAK.: प्रतिसारिणी प्रतीयं सर्तीति नीचानुगामिनीत्यर्थः.

प्रतिसिंह (1. प्र° + सिंह) m. *Gegenlöwe, ein feindlich gegenüber-*
stehender Löwe KATHÁS. 60, 106.

2. प्रतिसूर्धक UTTARARĀMAK. 33, 2 (43, 7).

प्रतिस्कन्धि 1) der Comm. zu KĀM. NĪTIS. liest स्कन्धस्कन्धेन; vgl. zu

Spr. 4514, Th. 3, S. 401.

प्रतिश्लोतम् adv. = प्रतिश्लोतम् BHĀG. P. 10, 78, 18. = प्रतिश्लोतं सं-
खम् Comm.

प्रतिस्वन (1. प्र° + स्वन) m. *Widerhall, Echo*; pl. BHĀG. P. 10, 12, 10.

प्रतिस्वम् (1. प्र° + स्व) adv. *jeder für sich, jeder einzeln* ĀÇV. ÇA. 6,
12, 7. — Vgl. प्रातिस्विक.

प्रतिर्क्ष m. *Aeusserung der Freude* DhĀTUP. 32, 13.

प्रतिहार 9) प्रती° N. pr. eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf.
H. 332, b, 4.

प्रतिहारसूत्र n. Titel eines Sūtra des Kātjājana Verz. d. Oxf. H.
379, b, No. 394.

प्रतिहार्य 2) vgl. प्रातिहार्य.

प्रतीक 2) d) मृतकप्रतीकाः adj. f. so v. a. *schauend auf* BHĀG. P. 10, 16, 21.

प्रतीकाश am Ende eines adj. comp. UTTARARĀMAK. 37, 8 (30, 8).

प्रतीति 2) पद्व° *das Begreifen, dass Etwas ein Wort ist*, SARVADAR-
CANAS. 142, 22. 30, 6. fg. 32, 1. — 3) *Vertrauen, zuversichtlicher Glaube*
DAÇAK. 76, 9 (wo mit der ed. Calc. तद्गता प्रतीतिः zu lösen ist). 81, 9.

प्रतीय 1) *Gegner, Widersacher*, mit gen. BHĀG. P. 10, 46, 35. 68, 27.

प्रतीली 1) KATHÁS. 124, 72. fg. °प्रतीलीका adj. 102, 11.

प्रतीष lies eines der 12 Söhne Vishṇu's von der Dakṣiṇā und
eines der Götter Tushita im Manvantara Svājam̐bhūva.

प्रत्यक्पुष्कर s. u. पुष्कर 3).

प्रत्यन्त 2) प्रत्यन्ताभाववादिन् SARVADARĀCANAS. 47, 6. °मूलता 3, 16. प्र-
त्यन्तं दृश्यते लोके कृतस्यापकृतस्य च *was in der Welt gethan und*
was versehen worden ist, springt sogleich in die Augen Spr. 3874.

Am Schluss hinzuzufügen Verz. d. Oxf. H. 208, b, 9. — 3) प्रतीप्तं पा-
वकं प्रत्यन्तेपावलोच्य Hit. 106, 12.

प्रत्यन्तता, nom. abstr. von प्रत्यन्त 2): ऋ° SARVADARĀCANAS. 3, 5.

प्रत्यन्तव dass. ebend. 3, 4. 9, 4.

प्रत्यन्ताय (von प्रत्यन्त) *deutlich vor Augen treten, augenfällig sein*:

प्रत्यन्तायमाणाव SĀH. D. 731.

प्रत्यन्तीकर, °कृतं मया Hit. 83, 21.

प्रत्यन्तीभू vor Augen treten, sich zeigen: °भूय KATHÁS. 66, 60. 72, 145.

प्रत्यक्सरस्वती f. *die westliche Sarasvatī* BHĀG. P. 11, 30, 6.

प्रत्यगात्मन्, प्रत्यगात्मता WEBER, RĀMAT. UP. 343.

प्रत्यगद्गृ adj. *dessen Blick nach innen gerichtet ist* (Gegens. परागद्गृ)
WEBER, RĀMAT. UP. 349.

प्रत्यग्र 1) स प्रत्यग्रैः (so MALLIN.) कुट्टककुसुमैः MEGH. 4. प्रत्यग्रम् adv.
vor Kurzem KATHÁS. 98, 29.

प्रत्यङ्गम् (1. प्रति + अङ्ग) adv. *in jedem Acte* SĀH. D. 540.

2. प्रत्यङ्ग, अङ्गप्रत्यङ्गापाङ्ग° SARVADARĀCANAS. 78, 4. °संभव 97, 18.

प्रत्यञ्च 1) c) Z. 1. fg. lies *westlich*. — d) प्रत्यगेकरस *nur an Inner-*
lichem Geschmack findend Ind. St. 9, 163. *immer wieder (beständig) eines*
und desselben Wesens WEBER. — 3) प्रतीची f. N. pr. eines Flusses
BHĀG. P. 11, 3, 40.

प्रत्यञ्जन Verz. d. Oxf. H. 311, b, 25.

प्रत्यनीक 1) *Gegner, Feind* BHĀG. P. 11, 30, 22. *entgegengesetzt* SAR-
VADARĀCANAS. 46, 5. 60, 9. *entgegenstehend, beeinträchtigend* 118, 14.